हफ़्तावार रिसाला : 180
Weekly Booklet : 180

सफ़हात 20

Shaane Siddiqe Akbar (Hindi)

शाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**शाने सिद्दीक़े अक्बर**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

शाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला **''शाने सिद्दीक़े अक्बर''** पढ़ या सुन ले उस को बे हिसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में जन्नती इब्ने जन्नती, सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ : नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना गुनाहों को इस क़दर जल्द मिटाता है कि पानी भी आग को उतनी जल्दी नहीं बुझाता और नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना गरदनें (या'नी ग़ुलाम) आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है।

(تاریخ بغداد ج ۷ ص 172)

जो हो मरीज़े ला दवा या किसी ग़म में मुब्तला सुब्ह़ो मसा पढ़े सदा صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब

इस्लाम का सूरज तुलूअ़ होने से पहले ज़मानए जाहिलिय्यत के दौर में एक नेक सीरत ताजिर (या'नी बिज़्नस मेन) मुल्के शाम तिजारत (या'नी बिज़्नस) के लिये गया, वहां उस ने एक ख़्वाब देखा, जो **''बह़ीरा''**

नामी राहिब को सुनाया। उस राहिब ने पूछा : तुम कहां से आए हो ? उस ताजिर ने जवाब दिया : ''मक्के से।'' उस ने फिर पूछा : ''कौन से क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखते हो ?'' ताजिर ने बताया : ''क़ुरैश से।'' पूछा : क्या ''करते हो ?'' कहा : ''ताजिर (या'नी बिज़्नस मेन) हूं।'' वोह राहिब कहने लगा : ''अगर **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे ख़्वाब को सच्चा फ़रमा दिया तो वोह तुम्हारी क़ौम में ही एक नबी मब्ऊ़स फ़रमाएगा (या'नी भेजेगा), उन की ज़िन्दगी में तुम उन के वज़ीर होगे और विसाल शरीफ़ (Death) के बा'द उन के जा नशीन होगे।'' उस नेक सीरत ताजिर ने अपना येह ख़्वाब और इस की ता'बीर किसी को न बताई जब इस्लाम का सूरज तुलूअ़ हुवा, **अल्लाह** करीम के आख़िरी रसूल, रसूले मक़्बूल, गुलशने रिसालत के महक्ते फूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लाने नुबुव्वत फ़रमाया तो इस ताजिर को मुल्के शाम में देखे जाने वाले उस के ख़्वाब और उस की ता'बीर का वाक़िआ़ बतौ़रे दलील ख़ुद ही इर्शाद फ़रमा दिया जिसे सुनते ही वोह नेक सीरत ताजिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गले लग गया और पेशानी मुबारक चूमते हुए कहा : ''मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप **अल्लाह** के सच्चे रसूल हैं।'' उस नेक सीरत ताजिर का कहना है : ''उस दिन मेरे इस्लाम लाने पर मक्कए पाक में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा कोई ख़ुश न था।'' (الریاض النضرۃ، ج۱، ص83)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! क्या आप जानते हैं कि येह नेक सीरत ताजिर कौन थे ? जी हां ! येह मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, सब से बड़े मुत्तक़ी (या'नी परहेज़ गार) जन्नती इब्ने जन्नती, सह़ाबी इब्ने सह़ाबी यारे ग़ार व यारे मज़ार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه थे।

सब से ज़ियादा सआ़दत मन्द

''**सुबुलुल हुदा वर्रशाद**'' में है : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक ख़्वाब देखा कि मक्कए पाक में एक चांद नाज़िल हुवा है, देखते ही देखते वोह चांद फट गया और उस के टुकड़े मक्कए पाक के हर घर में दाख़िल हो गए हैं फिर चांद के टुकड़े इकठ्ठे हो गए और वोह चांद आप की गोद में आ गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इस की ता'बीर पूछी तो बताया गया कि वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन का इन्तिज़ार है, आप उन की इत्तिबाअ़ (Follow) करने वाले और लोगों में सब से ज़ियादा सआ़दत मन्द होंगे। पस जब **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ए'लाने नुबुव्वत फ़रमाया और आप को इस्लाम की त़रफ़ बुलाया तो आप ने बिला ताख़ीर फ़ौरन इस्लाम क़बूल कर लिया। (سبل الھدیٰ والرشاد، 303/2)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का है यारे ग़ार महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

तआ़रुफ़

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का नामे मुबारक **अ़ब्दुल्लाह**, कुन्यत अबू बक्र और सिद्दीक़ व अ़तीक़ अल्क़ाब हैं। सिद्दीक़ का मा'ना है : ''बहुत ज़ियादा सच्चा।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

ज़मानए जाहिलिय्यत ही में इस लक़ब से मश्हूर हो गए थे क्यूं कि हमेशा सच ही बोलते थे और अ़तीक़ का मा'ना है : ''आज़ाद।'' **अल्लाह** पाक की अ़ता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को ख़ुश ख़बरी देते हुए फ़रमाया : ''اَنْتَ عَتِيْقٌ مِّنَ النَّارِ या'नी तुम दोज़ख़ की आग से आज़ाद हो।'' इस लिये आप का लक़ब ''अ़तीक़'' हुवा। (تاریخ الخلفاء ص ۲۹) आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه क़ुरैशी हैं और सातवीं पुश्त में शजरए नसब **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ानदानी शजरे से मिल जाता है, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه आ़मुल फ़ील (या'नी जिस साल ना मुराद अब्रहा बादशाह हाथियों के लश्कर के हमराह का'बए मुशर्रफ़ा पर ह़म्ला आवर हुवा था। उस) के तक़रीबन अढ़ाई साल बा'द मक्के शरीफ़ में पैदा हुए।

इलाही ! रह़्म फ़रमा ! ख़ादिमे सिद्दीक़े अक्बर हूं तेरी रह़मत के सदक़े, वासिता सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

हुल्या मुबारक

मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा आ़बिदा अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से पूछा गया : ''ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का हुल्या (मुबारक) कैसा था ?'' फ़रमाया : ''आप का रंग सफ़ेद, जिस्म कमज़ोर और रुख़्सार कम गोश्त वाले थे, कमर की जानिब से तहबन्द को मज़बूत़ी से बांधा करते थे ताकि लटक्ने से मह़फ़ूज़ रहे, आप के चेह्रए मुबारक की रगें वाज़ेह़ नज़र आती थीं, इसी त़रह़ हथेलियों की पिछली रगें भी साफ़ नज़र आती थीं।''

(تاریخ الخلفاء، ص ۲۵)

बेहतरी जिस पे करे फ़ख़्र वोह बेहतर सिद्दीक़ सरवरी जिस पे करे नाज़ वोह सरवर सिद्दीक़

ज़रूरी मस्अला

फ़ज़ाइलो मरातिब (या'नी मर्तबों) के ए'तिबार से मस्लके हक़ अहले सुन्नत व जमाअ़त के नज़्दीक तरतीब बयान करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तमाम सह़ाबए किराम आ'ला व अदना (और इन में अदना कोई नहीं) सब जन्नती हैं, बा'दे अम्बियाओ मुरसलीन (عَلَيْهِمُ السَّلَام) तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्नो मलक (या'नी इन्सानों, जिन्नों और फ़िरिश्तों) से अफ़्ज़ल ''सिद्दीक़े अक्बर'' हैं, फिर उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, फिर उ़स्माने ग़नी, फिर मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْهُم, ख़ुलफ़ाए अर्बआ़ राशिदीन (या'नी चार ख़ुलफ़ाए राशिदीन) के बा'द बक़िय्या अ़शरए मुबश्शरा व ह़ज़राते ह़सनैन व अस्ह़ाबे बद्र व अस्ह़ाबे बैअ़तुर्रिज़्वान (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के लिये अफ़्ज़लिय्यत है और येह सब क़त्ई जन्नती हैं। अफ़्ज़ल के येह मा'ना हैं कि **अल्लाह** पाक के यहां ज़ियादा इ़ज़्ज़तो मन्ज़िलत वाला हो, इसी को कस्रते सवाब से भी ता'बीर करते हैं।

(बहारे शरीअ़त, 1/241 ता 245 मुलख़्ख़सन)

मुस्त़फ़ा के सब सह़ाबा जन्नती हैं ला जरम सब से राज़ी ह़क़ तआ़ला सब पे है उस का करम

हर सह़ाबिये नबी	जन्नती जन्नती	ह़ज़रते उ़स्मान भी	जन्नती जन्नती
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी	जन्नती जन्नती	फ़ातिमा और अ़ली	जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी	जन्नती जन्नती	हर ज़ौजए नबी	जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सब से बड़ा मुत्तक़ी

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शानो अ़ज़मत के क्या कहने ! आप के फ़ज़ाइल आस्मान के तारों, ज़मीन के ज़र्रों की त़रह़ बे शुमार हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के फ़ज़ाइल क़ुरआने करीम में बयान किये गए, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई बल्कि फ़िरिश्तों के सरदार ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام भी ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से प्यार करते हैं। **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम में पारह 30, **सूरतुल्लैल** आयत नम्बर 17 ता 21 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ سَیُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿۱۷﴾ الَّذِیْ یُؤْتِیْ مَالَهٗ یَتَزَكّٰى ﴿۱۸﴾ وَ مَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ﴿۱۹﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿۲۰﴾ وَ لَسَوْفَ یَرْضٰى ﴿۲۱﴾

(پ30، اللیل:17تا21)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बहुत जल्द उस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़ गार। जो अपना माल देता है कि सुथरा हो और किसी का उस पर कुछ एह़सान नहीं जिस का बदला दिया जाए सिर्फ़ अपने रब की रिज़ा चाहता जो सब से बुलन्द है और बेशक क़रीब है कि वोह राज़ी होगा।

आज से तक़रीबन आठ सो साल पुराने बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ **तफ़्सीरे कबीर** में इर्शाद फ़रमाते हैं : ''मुफ़स्सिरीने किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰه) का इस बात पर इज्माअ़ (या'नी इत्तिफ़ाक़) है कि येह आयते मुबारका अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई।'' (تفسیر کبیر، 187/11)

ख़ुदा इक्राम फ़रमाता है اَتْقٰی कह के क़ुरआं में
करें फिर क्यूं न इक्राम अत्क़िया सिद्दीक़े अक्बर का

शाने नुज़ूल

जब ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने (मुअज़्ज़िने रसूल) ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बहुत महंगी क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद किया तो कुफ़्फ़ार को हैरत हुई और उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ऐसा क्यूं किया ? शायद ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का उन पर कोई एह़सान होगा जो उन्हों ने इतनी महंगी क़ीमत दे कर इन्हें ख़रीदा और आज़ाद कर दिया । इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस आयत और इस के बा'द वाली आयत में ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का येह फ़े'ल मह़ज़ (या'नी सिर्फ़) **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये है किसी के एह़सान का बदला नहीं और न उन पर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वग़ैरा का कोई एह़सान है ।

(خازن، اللّیل، تحت الآیۃ:19-20، 4/385)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! याद रहे कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के इ़लावा भी बहुत से लोगों को उन के इस्लाम की वज्ह से ख़रीद कर आज़ाद किया जैसे ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा, ह़ज़रते उम्मे उ़मैस और ह़ज़रते ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم और आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इस्लाम की दा'वत आ़म करने की बरकत से पांच वोह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए जिन का शुमार "**अ़शरए मुबश्शरा**" में होता है । (अ़शरए मुबश्शरा वोह दस

सह़ाबए किराम हैं जिन को उन की ज़िन्दगी में ही **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत की ख़ुश ख़बरी अ़त़ा फ़रमा दी थी ।)

वोह दसों जिन को जन्नत का मुज़्दा मिला उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

हर सह़ाबिये नबी	जन्नती जन्नती	ह़ज़रते उ़स्मान भी	जन्नती जन्नती
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी	जन्नती जन्नती	फ़ातिमा और अ़ली	जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी	जन्नती जन्नती	हर ज़ौजए नबी	जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللهُ عَنْه) की ख़रीदारी पर हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللهُ عَنْه) के लिये फ़रमाया था : ऐ अबू बक्र ! बिलाल की ख़रीदारी में हम को भी अपने साथ मिला लो, आधी क़ीमत हम से ले लो हम तुम दोनों इन के ख़रीदार । तो ह़ज़रते सिद्दीक़ (رَضِیَ اللهُ عَنْه) तड़प गए क़दमों पर फ़िदा हो कर बोले : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं भी आप का ग़ुलाम, बिलाल भी आप के ग़ुलाम, हुज़ूर ! मैं ने इन्हें आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये ख़रीदा है मैं ने इन्हें आज़ाद कर दिया । (ह़ज़रते) बिलाल (رَضِیَ اللهُ عَنْه) ने जब चेह्रए मुस्त़फ़ा देखा तो चेह्रए पाक देखते ही ग़श खा कर बेहोश हो गए, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने अपनी चादर से (उन के) चेहरे का गर्दो ग़ुबार साफ़ किया और फ़रमाया : اُوْذِيْتَ فِي اللهِ كَثِيْرًا या'नी ऐ बिलाल तुझे **अल्लाह** की राह में बड़ी अज़िय्यतें पहुंचीं ।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि ऐ सिद्दीक़ ! तुम पर लाखों सलाम कि तुम ने हम सब मुसल्मानों के आक़ा ह़ज़रते बिलाल को आज़ाद किया । तुम

ने हमारे आक़ा ह़ज़रते बिलाल को आज़ाद किया तुम हमारे आक़ा के आक़ा हो। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/352)

गदा सिद्दीक़े अक्बर का ख़ुदा से फ़ज़्ल पाता है
ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा सिद्दीक़े अक्बर का

जन्नते अ़दन का ह़क़दार कौन ?

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जब अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) पैदा हुए तो **अल्लाह** पाक ने जन्नते अ़दन से इर्शाद फ़रमाया : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! तुझ में सिर्फ़ उन्ही लोगों को दाख़िल करूंगा जो इस पैदा होने वाले (या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) से मह़ब्बत रखेगा। (مختصر تاریخ دمشق، 13/69)

तू है आज़ाद सक़र से तेरे बन्दे आज़ाद है येह सालिक भी तेरा बन्दए बे ज़र सिद्दीक़

ज़मीन से ज़ियादा आस्मान पर शोहरत

जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि एक बार ह़ज़रते जिब्रीले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और एक कोने में बैठ गए, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वहां से गुज़रे तो जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह अबू क़ह़ाफ़ा के बेटे हैं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! क्या तुम आस्मान में रहने वाले इन्हें पहचानते हो ?" ह़ज़रते जिब्रीले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) ने अ़र्ज़ किया : "उस रब की क़सम जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर

भेजा है ! अबू बक्र ज़मीन की ब निस्बत आस्मानों में ज़ियादा मश्हूर हैं और आस्मानों में उन का नाम ''**ह़लीम**'' है।'' (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۸۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दिक़े अक्बर के बारे में

12 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1) जिसे दोज़ख़ से आज़ाद शख़्स को देखना हो वोह ''**अबू बक्र**'' को देख ले। (معجم اوسط، 456/6، حدیث:9384)

(2) अबू बक्र की मह़ब्बत और इन का शुक्र मेरी तमाम उम्मत पर वाजिब है। (تاریخ الخلفاء، ص۴۴)

(3) अबू बक्र ! मेरी उम्मत में सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले शख़्स तुम ही होगे। (ابوداؤد، 280/4، حدیث:4652)

(4) (ऐ अबू बक्र !) तुम आग से **अल्लाह** पाक के आज़ाद किये हुए हो। (ترمذی، حدیث:3699)

(5) ''ऐ अबुल ह़सन ! (या'नी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया :) मेरे नज़्दीक अबू बक्र का वोही मक़ाम है जो **अल्लाह** पाक के हां मेरा मक़ाम है।'' (الریاض النضرۃ، 185/1)

(6) **अल्लाह** पाक ने कुछ जन्नती ह़ूरों को फूलों से पैदा फ़रमाया है और उन्हें गुलाबी ह़ूरें कहा जाता है, उन से सिर्फ़ नबी या सिद्दीक़ या शहीद ही निकाह़ कर सकते हैं और अबू बक्र को ऐसी चार सो (400) ह़ूरें अ़त़ा की जाएंगी। (الریاض النضرۃ، ۱، ص۱۸۴)

(7) मुझे आस्मानों की सैर कराई गई पस मेरा जिस आस्मान से गुज़र हुवा मैं ने वहां अपना नाम लिखा हुवा पाया और अपने बा'द अबू बक्र का नाम भी लिखा हुवा पाया। (مجمع الزوائد، الحدیث:۱۴۲۹۶، ج۹، ص۱۹)

(8) मुझ पर जिस किसी का एह़सान था मैं ने उस का बदला चुका दिया है, मगर अबू बक्र के मुझ पर वोह एह़सानात हैं जिन का बदला **अल्लाह** पाक रोज़े क़ियामत उन्हें अ़त़ा फ़रमाएगा। (ترمذی،حدیث:۳۶۸۱،۵/۳۷۴)

(9) ''अबू बक्र दुन्या व आख़िरत में मेरा भाई है, **अल्लाह** पाक इस पर रह़्म फ़रमाए और **अल्लाह** के रसूल की त़रफ़ से इसे बेहतर जज़ा दे कि इस ने अपनी जानो माल से मेरी मदद की है।'' (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۳۱)

(10) अबू बक्र पर किसी को फ़ज़ीलत मत दो कि वोह दुन्या व आख़िरत में तुम सब (सह़ाबा) से अफ़्ज़ल है। (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۳۷)

(11) मेरी उम्मत के लिये सब से ज़ियादा मेह्रबान अबू बक्र सिद्दीक़ हैं।

(ترمذی،حدیث:۳۸۱۵ملتقطا)

(12) ऐ अबू बक्र! **अल्लाह** पाक रोज़े क़ियामत मख़्लूक़ पर आ़म तजल्ली फ़रमाएगा और तुम पर ख़ास तजल्ली फ़रमाएगा।

(لسان المیزان، 114/2، رقم:1783)

सारे अस्ह़ाबे नबी तारे हैं उम्मत के लिये इन सितारों में बने महरे मुनव्वर सिद्दीक़
इन के मद्दाह़ नबी इन का सना गो अल्लाह ह़क़ अबुल फ़ज़्ल कहे और पयम्बर सिद्दीक़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आ़शिक़े अक्बर का इ़श्क़े रसूल

अ़ज़ीम ताबिई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ारे सौर की त़रफ़ जा रहे थे तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कभी हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के आगे चलते और कभी पीछे चलते, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : ऐसा क्यूं करते हो ? उन्हों ने जवाब दिया : जब मुझे तलाश करने वालों का ख़याल आता है तो मैं आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे हो जाता हूं और जब घात में बैठे हुए दुश्मनों का ख़याल आता है तो आगे आगे चलने लगता हूं, कि कहीं आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई तक्लीफ़ न पहुंचे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम ख़त़रे की सूरत में मेरे आगे मरना पसन्द करते हो ? अ़र्ज़ की : रब्बे जुल जलाल की क़सम ! मेरी येही आरज़ू है। (आ़शिक़े अक्बर, स. 31)

परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

"क़ई जन्नती" (या 'नी यक़ीनी जन्नती) के 8 हुरूफ़ की निस्बत से 8 ख़ुसूसिय्याते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

(1) आप ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी मुबारक ज़िन्दगी में 17 नमाज़ें पढ़ाईं।

(2) आप ही ने सब से पहले क़ुरआने करीम को जम्अ़ फ़रमाया।

(عمدۃ القاری، 13/534)

(3) आप सब से पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ने वाले हैं। (تاریخ الخلفاء، ص25)

(4) अहले सुन्नत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अम्बियाओ मुरसलीन (عَلَیْہِمُ السَّلَام) के बा'द तमाम इन्सानों, जिन्नों और फ़िरिश्तों से आप अफ़्ज़ल हैं।

(5) आप ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी के 47 साल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ गुज़ारे। (फ़तावा रज़विय्या, 28/457 तस्हीलन मुलख़्ख़सन मुल्तक़त़न)

(6) आप वोह ख़ुश नसीब हैं कि ख़ुद सह़ाबी, वालिद सह़ाबी, बेटे, बेटियां, पोते और नवासे सह़ाबी, رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم (تاریخ ابن عساکر، 19/30) आप के इ़लावा येह ए'ज़ाज़ किसी को ह़ासिल नहीं हुवा।

(7) आप ने सब से पहले मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में ख़ुत्बा दिया।

(تاریخ ابن عساکر، رقم: 3398)

(8) आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ कपड़े का कारोबार किया करते थे। (لمعات التنقیح، 500/6)

चमनिस्ताने नुबुव्वत की बहारे अव्वल गुलशने दीं के बने पहले गुले तर सिद्दीक़

इ़ल्मे ता'बीर

ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की इ़ल्मे ता'बीर में महारत का राज़ येह था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने येह इ़ल्म बराहे रास्त बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पाया। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझे ख़्वाबों की ता'बीर बताने का हुक्म दिया गया है और येह कि मैं येह इ़ल्म "**अबू बक्र**" को सिखाऊं। (تاریخ ابن عساکر، حدیث: ۲۳۲۵)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मन्ज़ूरे नज़र

इमामे अहले सुन्नत सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अश्अ़री رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : अबू बक्र हमेशा **अल्लाह** पाक की नज़रे रिज़ा से मन्ज़ूर रहे। (ارشاد الساری، 370/8 ملخصاً)

ह़ज़रते इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ "**अल यवाक़ीत वल जवाहिर**" में फ़रमाते हैं : **अल्लाह** करीम के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से फ़रमाया : "क्या तुम्हें वोह वाला

दिन याद है ?'' अ़र्ज़ की : हां याद है और येह भी याद है कि उस दिन सब से पहले हुज़ूर ने ''بَلٰی'' फ़रमाया था। (इस से मुराद रोज़े मीसाक़ है, जब **अल्लाह** पाक ने सारे इन्सानों की रूहों से फ़रमाया था : **''क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं ?''** तो सब ने ''بَلٰی'' या'नी **''क्यूं नहीं''** कहा था।)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه रोज़े अलस्त (या'नी मीसाक़ के दिन) से रोज़े विलादत और रोज़े विलादत से रोज़े वफ़ात और रोज़े वफ़ात से अबदुल आबाद (या'नी हमेशा हमेशा) तक सरदारे मुस्लिमीन हैं। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 62)

नबी का और ख़ुदा का मद्ह़ गो सिद्दीक़े अक्बर है

नबी सिद्दीक़े अक्बर का ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

दुन्या से बे रग़बती

जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه ने पीने के लिये पानी त़लब फ़रमाया तो एक कटोरे (बरतन) में पानी और शह्द पेश किया गया। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उसे मुंह के क़रीब किया तो रो पड़े और ह़ाज़िरीन को भी रुला दिया फिर आप رَضِیَ اللهُ عَنْه तो ख़ामोश हो गए लेकिन लोग रोते रहे। (उन की येह ह़ालत देख कर) आप رَضِیَ اللهُ عَنْه पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और आप رَضِیَ اللهُ عَنْه दोबारा रोने लगे यहां तक कि ह़ाज़िरीन को गुमान हुवा कि वोह अब रोने का सबब भी नहीं पूछ सकेंगे, फिर कुछ देर के बा'द जब इफ़ाक़ा हुवा तो लोगों ने अ़र्ज़ की : किस चीज़ ने आप को इस क़दर रुलाया ? अमीरुल मुअमिनीन

ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं एक मरतबा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने आप से किसी चीज़ को दूर करते हुए फ़रमा रहे थे : मुझ से दूर हो जा, मुझ से दूर हो जा, लेकिन मुझे आप के पास कोई चीज़ दिखाई नहीं दे रही थी। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप किस चीज़ को अपने आप से दूर फ़रमा रहे हैं जब कि मुझे आप के पास कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही ? सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह दुन्या थी जो बन संवर कर मेरे सामने आई तो मैं ने इस से कहा : मुझ से दूर हो जा तो वोह हट गई। उस ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो मुझ से बच गए लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आने वाले न बच सकेंगे। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे ख़ौफ़ हुवा कि दुन्या मुझ से चिमट गई है। बस इसी बात ने मुझे रुला दिया।

(مسند بزار، ۱/۱۹۶، حدیث: ۴۴)

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
ह़क़ीक़ी आ़शिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं
निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर हैं
तक़ी हैं बल्कि शाहे अत्क़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

शाने सिद्दीक़े अक्बर

अ़ज़ीम ताबिई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास (**सूरतुल फ़ज्र** की) येह आयाते मुबारका तिलावत की गईं :

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِيْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿۲۹﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿۳۰﴾

(پ30، الفجر:27تا30)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ इत्मीनान वाली जान ! अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ।

तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कहा : येह कितना अच्छा है। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारी मौत के वक़्त फ़िरिश्ता ज़रूर येह कहेगा। (تفسیر طبری، 581/12، حدیث:37213)

सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) जब से ख़िदमते अक़्दस (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) में ह़ाज़िर हुए किसी वक़्त जुदा न हुए। यहां तक कि बा'दे वफ़ात भी पहलूए अक़्दस में आराम फ़रमा हैं।

एक मरतबा हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दाह्ने दस्ते अक़्दस में ह़ज़रते सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) का हाथ लिया और बाएं दस्ते मुबारक में ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) का हाथ लिया और फ़रमाया : हम क़ियामत के रोज़ यूहीं उठाए जाएंगे। (ترمذی، 378/5، حدیث:3689)

इन्तिक़ाल शरीफ़

आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ 22 जुमादल उख़्रा सिन 13 हि. बरोज़ पीर शरीफ़ 63 साल की उ़म्र में दुन्या से रुख़्सत हुए। (السنن الکبری للبیہقی، 557/3، حدیث:6663)

ब वक़्ते वफ़ात ज़बाने मुबारक पर आख़िरी कलिमात येह थे : ऐ परवर्दगार ! मुझे इस्लाम पर मौत अ़त़ा फ़रमा और मुझे नेक लोगों के साथ मिला दे। (الریاض النضرۃ، 258/1)

कलिमए शहादत की बरकत

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को उन की वफ़ात शरीफ़ के बा'द लोगों ने (ख़्वाब में देखा) देखा और पूछा कि ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप अपनी ज़बान के बारे में फ़रमाया करते थे कि इस ज़बान ने मुझे हलाकत की जगहों में गिराया है तो **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं ने इसी से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ पढ़ा था, तो इसी ज़बान ने मुझे जन्नत में दाख़िल कर दिया। (احیاء العلوم، ۴/۴۳۱)

मक़ामे ख़्वाबे राहत चैन से आराम करने को बना पहलूए महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! आ़शिक़े अक्बर, सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की मुबारक ज़िन्दगी हमारे लिये बेहतरीन मिसाल है, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़ना फ़िर्रसूल के अ़ज़ीम दरजे पर पहुंचे हुए थे। आप की हर हर अदा गोया सुन्नते मुस्त़फ़ा थी। ऐ काश ! सद करोड़ काश ! हम ग़ुलामाने सिद्दीक़े अक्बर भी सुन्नते मुस्त़फ़ा पर मज़बूत़ी से अ़मल करना शुरूअ़ कर दें, न सिर्फ़ ख़ुद बल्कि घर घर नेकी की दा'वत पहुंचा कर दूसरों को भी सुन्नतों पर चला कर इस शान से दुन्या से जाएं।

जैसा कि आ़शिक़े माहे रिसालत, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ लिखते हैं :

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर चले तू गले लगाना मदनी मदीने वाले

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! जन्नती इब्ने जन्नती, सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ समेत तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ग़ुलामी का ह़क़ीक़ी जज़्बा पाने और दिल

में इश्क़े रसूल की शम्अ़ रोशन करने के लिये दा'वते इस्लामी के प्यारे प्यारे माहोल से वाबस्ता हो जाइये, ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के सुन्नतों को आ़म कीजिये, अपने चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी और सर पर अंग्रेज़ी बालों के बजाए सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़ुल्फ़ें सजा कर नंगे सर घूमने के बजाए इमामे शरीफ़ का ताज सजा लीजिये। **अल्लाह** पाक और उस के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में ज़िन्दगी गुज़ारते हुए तमाम सह़ाबा व अहले बैत से प्यार कीजिये क्यूं कि जैसे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से अ़क़ीदतो मह़ब्बत ईमान की सलामती के लिये बेह़द ज़रूरी है यूंही शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ैरात पाने के लिये दिल में अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत भी लाज़िमी है। इन दोनों अ़ज़ीम हस्तियों की मह़ब्बत दिल में होगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه दोनों जहां में बेड़ा पार होगा।

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार, अस्ह़ाबे हुज़ूर नज्म हैं और नाउ है इतरत रसूलुल्लाह की

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का निहायत अदब कीजिये

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुसल्मान को चाहिये कि सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रखे और दिल में इन की अ़क़ीदतो मह़ब्बत को जगह दे। इन की मह़ब्बत हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत है और जो बद नसीब, सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने ख़ुदा व रसूल है। मुसल्मान ऐसे शख़्स के पास न बैठे। (सवानेह़े करबला, स. 31)

गुस्ताख़े सहाबा से दूर रहो

हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "**शर्हुस्सुदूर**" में लिखते हैं : एक शख़्स की मौत का वक़्त क़रीब आ गया तो उस से कलिमए त़य्यिबा पढ़ने के लिये कहा गया। उस ने जवाब दिया कि मैं इस के पढ़ने पर क़ादिर नहीं हूं क्यूं कि मैं ऐसे लोगों के साथ उठना बैठना रखता था जो मुझे **अबू बक्र व उ़मर** رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के बुरा भला कहने की तल्क़ीन करते थे। (شرح الصدور، ص ۳۸ مرکز اہلسنت برکات رضا الہند)

ऐ आ़शिक़ाने सहाबा व अहले बैत ! दोस्ती रखने का येह वबाल कि मरते वक़्त कलिमा नसीब नहीं हो रहा था तो फिर जो लोग ख़ुद तौहीन करते हैं उन का क्या ह़ाल होगा ! लिहाज़ा शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا समेत तमाम ही सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के गुस्ताख़ों से दूरो नुफ़ूर रहना ज़रूरी है। सिर्फ़ आ़शिक़ाने रसूल व मुहि़ब्बाने सहा़बा व औलिया की सोह़बत इख़्तियार कीजिये, इन अ़ज़ीम हस्तियों की उल्फ़त का दिया (या'नी चराग़) अपने दिल में रोशन कीजिये और दोनों जहां की भलाइयों के ह़क़दार बनिये। अपने बच्चों को भी येह सिखाइये कि हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती।

हर सह़ाबिये नबी	जन्नती जन्नती	ह़ज़रते उ़स्मान भी	जन्नती जन्नती
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी	जन्नती जन्नती	फ़ाति़मा और अ़ली	जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी	जन्नती जन्नती	हर ज़ौजए नबी	जन्नती जन्नती

(सीरते आ़शिक़े अक्बर सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه की मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना का 64 सफ़ह़ात का रिसाला "**आ़शिक़े अक्बर**" और तक़रीबन 700 सफ़ह़ात की किताब "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" पढ़िये, इस को दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से मुफ़्त डाउन लोड भी कर सकते हैं।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

जन्नत की बिशारत

हज़रते सय्यिदुना अबुद्दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कोई ऐसा अ़मल इर्शाद फ़रमाइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे ? सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "لَا تَغْضَبْ وَلَكَ الْجَنَّةُ" या'नी गुस्सा न करो, तो तुम्हारे लिये जन्नत है।

(مجمع الزوائد، ج۸، ص۱۳۴، الحدیث ۱۲۹۹۰، دار الفکر بیروت)

978-969-722-117-2
01013112

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی، کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net